महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बिहार

मानविकी एवं भाषासंकाय

संस्कृत विभाग

कक्षा- एम.ए./एम.फिल./पीएच्.डी.

विषय- काव्यप्रकाशः

उपविषय- काव्य-भेद

प्रो. प्रसून दत्त सिंह
अध्यक्ष, संस्कृत विभाग
महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय

काव्य-भेद

आचार्य मम्मट ने आनन्दवर्धनवर्धन का अनुकरण करते हुए काव्य के तीन भेद उत्तम, मध्यम तथा अधम स्वीकार किये हैं और काव्य के इस वर्गीकरण का आधार व्यंजना वृत्ति को माना है।

(1) उत्तम काव्य - जिसे ध्वनिवादी आचार्यों ने ध्वनि-काव्य कहा था।

(2) मध्यम काव्य - इसे ध्वनिवादी आचार्य ध्वनि के निष्यन्द से उत्पन्न गुणीभूतव्यङ्ग्य कहते थे।

(3) अवर काव्य - इसे ध्वनिवादी चित्रकाव्य के नाम से अभिहित करते थे।

उत्तम काव्य / ध्वनिकाव्य

इदमुत्तममतिशायिनी व्यङ्ग्ये वाच्याद् ध्वनिबुधैः कथितः।

(का.प्र-1/4)

अर्थात् अभिधा वृत्ति से प्रतिपादित अर्थ वाच्यार्थ कहा जाता है। व्यंजना वृत्ति से प्रतिपादित अर्थ व्यङ्ग्य होता है। इन दोनों अर्थों में से जहाँ वाच्यार्थ की अपेक्षा व्यङ्ग्यार्थ अधिक चमत्कारी होता है, वह उत्तम काव्य होता है। इसी को ध्वनिवादी आचार्य ध्वनिकाव्य की संज्ञा देते हैं। इस प्रकार के काव्य के उदाहरण कालिदासादि मूर्धन्य कवियों के काव्य हैं। जहाँ अर्थ स्वयं को तथा शब्द अपने वाच्यार्य को गौण कर विशिष्ट अर्थ को व्यक्त करते हैं, वह काव्यविशेष ही ध्वनि है। इस ध्वनिकाव्य में वाच्यार्थ की अपेक्षा व्यङ्ग्यार्थ अधिक स्पष्ट होकर पाठक को आकृष्ट करता है।

इस उत्तम काव्य के उदाहरण के रूप में मम्मट इस श्लोक को उद्धृत करते हैं-

निश्शेषच्युतचन्दनं स्तनतटं निमष्टरागोऽधरो,
नेत्रे दूरमनजने पुलकिता तन्वी तवेयं तनुः ।
मिथ्यावादिनि दूति बान्धवजनस्याज्ञातपीडागमे,
वापीं स्नातुमितो गताऽसि न पुनस्तस्याधमस्यान्तिकम् ॥

(का० प्र० 1/2)

इस श्लोक में प्रयुक्त (अधम) पद से यह ध्वनित हो रहा है कि तू तो उसी के साथ रतिक्रीड़ा करने गयी थी जो वाच्यार्थगम्य नहीं है - "अत्र तदन्तिकमेवरन्तुं गताऽसीति प्राधान्येनाऽधमपदेन व्यज्यते ।"

(का०प्र०, वृत्ति 1/4)

अतः यहाँ वाच्यार्थ गौण है तथा व्यङ्ग्यार्थ ही रसोपकारक होने से चमत्कार जनक है ।

मध्यम काव्य

अतादृशी गुणीभूतव्यङ्ग्यं व्यङ्ग्ये तु मध्यमम्।

(का.प्र-1/5)

मम्मट की दृष्टि में मध्यम काव्य का स्वरूप वह है कि जिस काव्य में व्यङ्ग्यार्थ वाक्यार्थ की अपेक्षा अधिक प्रभावकारी नहीं होता है अर्थात् वाच्यार्थ स्वयं चमत्कारक होता है वह मध्यम काव्य है। आनन्दवर्धन ने इसे मध्यम काव्य न कहकर 'गुणीभूत व्यग्य' संज्ञा दी है। इसका शब्दार्थ है - "व्यङ्ग्यार्थ जहाँ गौण है"

"व्यङ्ग्यार्थ प्राधान्ये ध्वनि संज्ञितः काव्यप्रकारः, गुणभावे तु गुणीभूत व्यङ्ग्यता"

आनन्दवर्धन की दृष्टि में यह काव्य कम चमत्कारक नहीं होता है अपितु वह तो ध्वनि का निष्यन्द रूप दूसरे प्रकार का अतिरमणीय सहृदय संवेद्यकाव्य है- "तदयं ध्वनिनिष्यन्दरूपो द्वितीयोऽपि महाकवि विषयोऽतिरमणीयो लक्षणीयसहृदयः।"

मम्मट ने मध्यम काव्य को इस उदाहरण के द्वारा स्पष्ट किया है-

ग्रामतरुणं तरुण्या नववञ्जुलमञ्जरीसनाथकरम्।
पश्यन्त्या भवति मुहुर्नितरां मलिना मुखच्छाया।

(का०प्र० 13)

इस पद्य में व्यङ्ग्यार्थं वाच्यार्थ से अधिक चमत्कारजनक नहीं है किन्तु चमत्कार इस पद्य में है। पद्य में व्यङ्ग्यार्थ - 'बञ्जुल निकुञ्ज' में मिलने का संकेत करके भी नायिका उस संकेत स्थल पर नहीं गयी, यह है। किन्तु इसकी मुखच्छाया का मलिन होना अधिक रमणीय है अतः व्यङ्ग्यार्थ की अपेक्षा यहाँ वाच्यार्थ अधिक चमत्कारजनक है - "अत्र बञ्जुललतागृहे दत्तसंकेता नागतेति व्यङ्ग्यं गुणीभूतं तदपेक्षया वाच्यस्यैव चमत्कारित्वात्।" इसलिए यह गुणीभूत व्यङ्ग्य काव्य का उदाहरण है।

इस प्रकार हम देखते है कि मम्मट का उत्तम काव्य आनन्दवर्धन का ध्वनिकाव्य तथा मम्मट का मध्यम काव्य आनन्दवर्धन का गुणीभूतव्यङ्ग्य काव्य है। आशय यह है कि इस दृष्टि से मम्मट का प्रेरक ग्रन्थ ध्वन्यालोक ही रहा है।

ध्वनिकाव्य एवं गुणीभूतव्यङ्ग्यकाव्य के पारस्परिक अन्तर का निर्देश आनन्दवर्धन ने इस कारिका में इस प्रकार किया है-

> प्रकारोऽन्योगुणीभूतव्यङ्ग्यः काव्यस्य दृश्यते।
> यत्र व्यङ्ग्यान्वये वाच्यचारुत्वं स्यात् प्रकर्षवत्॥

अर्थात् एक में व्यङ्ग्यार्थ की अनुभूति पर्याप्त मात्रा में होती है तो दूसरे में व्यङ्ग्यार्थगर्भित वाच्यार्थ की अनुभूति।

अवर काव्य

इन दोनों के अतिरिक्त काव्य का तीसरा प्रकार है अवर काव्य। जिस काव्य में व्यङ्ग्यार्थ की अपेक्षा शब्द एवं वाच्य चित्रों का ही प्राधान्य होता है उसे अवर अथवा अधम काव्य कहा जाता है—

शब्दचित्रं वाच्यचित्रमव्यङ्ग्यं त्ववरं स्मृतम्।

(का० प्र० 1/5)

अर्थात् अवर अथवा अधम काव्य में व्यङ्ग्यार्थं का पूर्णत: अभाव ही रहता है। तथा शाब्दिक चमत्कार की विद्यच्छटा पाठक को चमत्कृत करती है। यह अवर काव्य शब्द एवं अर्थ भेद से दो प्रकार का होता है –

(1) शब्दचित्र तथा (2) अर्थचित्र।

आनन्दवर्धन इसी अवर काव्य को चित्रकाव्य की संज्ञा देते हैं तथा इसे वे काव्य न कहकर काव्य का अनुकरण या आभासमात्र कहते हैं—

"न तन्मुख्यं काव्यं। काव्यानुकारोह्यसौ।"

आचार्य आनन्दवर्धन चित्रकाव्य (अवर) को हेय दृष्टि से देखते हुए भी इसके अस्तित्व को स्वीकार करते हैं। मम्मट ने अपने अधम काव्य की प्रेरणा आनन्दवर्धन के चित्रकाव्य से ग्रहण की है। आनन्दवर्धन का कथन है कि इस प्रकार व्यङ्ग्य के प्रधान और गुणाभाव से स्थित होने पर वे दोनों ध्वनि और गुणीभूतव्यङ्ग्य काव्य होते हैं और उनसे भिन्न जो (काव्य रह जाता) है उसे (चित्र के समान काव्य के तात्त्विक रूप से विहीन काव्य की प्रतिकृति के समान होने से) 'चित्र' (काव्य) कहते हैं। शब्द और अर्थ के भेद से चित्र (काव्य) दो प्रकार का होता है। इनमें से कुछ शब्दचित्र होते हैं। और उन (शब्दचित्र) से भिन्न अर्थ चित्र (कहलाते) हैं।

आचार्य मम्मट ने चित्रकाव्य का उदाहरण देकर उसे इस प्रकार स्पष्ट किया—

स्वच्छन्दोच्छलदच्छकच्छकुहरच्छातेतराम्बुच्छटा-
मूर्छन्मोहमहर्षिहर्ष विहितस्नानाह्निकाह्नाय वः ।
भिद्यादुद्यदुदारदर्दुरदरी दीर्घादरिद्रद्रुम-
द्रोहोद्रेकमहोर्मिमेदुरमदा मन्दाकिनी मन्दताम् ॥

यह लोक शब्दचित्र-काव्य का उदाहरण है। इसमें कवि स्वच्छन्द रूप से उछलते हुए जल का चित्र 'छ' वर्ण की योजना द्वारा चित्रित कर रहा है। साथ ही महोर्मियों (लहरों) की भयंकरता की प्रतीति 'द' के बाद 'र' की अनवरत ध्वनियों से करा रहा है। इस उदाहरण को भक्तिरस का उदाहरण भी कहा जा सकता है, किन्तु यहाँ कवि की भक्ति में उतनी तन्मयता नहीं है जितनी शब्दचित्र की योजना एवं कौशल-प्रदर्शन में है।

अर्थचित्र

शब्द-चमत्कार की अपेक्षा अर्थ का चमत्कार जहाँ विशेष होता है। उसे मम्मट ने 'अर्थचित्र' काव्य माना है। उदाहरण के लिए, मम्मट ने हयग्रीव बध का यह श्लोक उद्धृत किया है—

विनिर्गतं मानदमात्ममन्दिराद्भवत्युपश्रुत्य यदृच्छयाऽपि यम्।
ससंभ्रमेन्द्रद्रुतपातितार्गलानिमीलिताक्षीव भियाऽमरावती॥

"दैत्यराज हयग्रीव के भय से अमरावती के द्वार पर भयभीत इन्द्र अर्गला डालकर मार्ग अवरुद्ध कर देता है। उस समय अमरावती की दशा ऐसी हो जाती है कि मानो भयविक्लवा नेत्रनिमीलिता नारी हो।"

इस श्लोक में वीर रस के आभास के साथ काव्य का चमत्कार उत्प्रेक्षा नामक अलंकार के आश्रित है तथा यहाँ कोई व्यंग्यार्थ नहीं है, अतः यह अर्थचित्र या वाच्यचित्र का उदाहरण है।

चित्र काव्य अथवा अवर काव्य प्रारम्भिक कवियों द्वारा रचित काव्य होता है। आनन्दवर्धन भी इसे अभ्यासार्थी प्राथमिक कवियों की रचना माना हैं –

"प्राथमिकानामभ्यासार्थिनां यदि परम चित्रण व्यवहारः प्राप्तपरिणतीनां तु ध्वनिरेव प्राधान्येन काव्यम्।"

मम्मट से परवर्ती आचार्य विश्वनाथ ने मम्मट के प्रथम दो काव्य के भेद तो स्वीकार किये हैं किन्तु चित्र नामक काव्य के भेद को स्वीकार नहीं किया है।

संस्कृत काव्यशास्त्र में मम्मट के इस काव्य-भेद के विचार ने महत्त्वपूर्ण कार्य यह किया है कि पहले काव्य के जो अनेक रूप प्रचलित थे, उन्हें एकरूपता एवं स्पष्टता मिली है। किन्तु इस दिशा में मम्मट आनन्दवर्धन से विशेष रूप से प्रभावित हैं।

धन्यवादः